



वंदना यादव

'छोटा सा बच्चा'

मेरे अंदर आज भी एक
छोटा सा बच्चा है
वो झिझकता है, पिछड़ता है,
माँ का आंचल छूट जाने से
इरता है
शरारतें करता है,
आग में कूदता है
चढ़ कर पहाड़ों पर
वादियों में चलता है
बहता है नदी के धारों में
पानी में कंकड़ फेंकता है
भर कर झोली फूलों से
हरी घास में दौड़ता है
सुबह से शाम और
शाम से सुबह तक
सपनों में रहता है
मेरे अंदर आज भी एक
छोटा सा बच्चा है।

वह सरकता है, सिसकता है,
बड़ा होने को तड़पता है
गिर-गिर के उठता है, उठ-उठ के
दौड़ता है
छत पर चढ़ के हवेली की
ऊँची पतंग उड़ाता है
बाड़े में घर के
गाय दूहता है
खेलता है बछड़े से

चौबारे में जाता है
आँगन में घर के
लुक-छिप खेलता है
नहाता है नहरों में, धूप सेंकता है
रिमझिम फुहारों में
भीगा सा रहता है
मेरे अंदर आज भी एक
छोटा सा बच्चा है।

वह मचलता है, महकता है,
मुट्ठी में रेत बाँधता है
हर रोज़ नई एक आस पालता है
जी भर के खेलता है
ठठा के हंसता है
नई दुनिया बसाने का
ख्वाब देखता है
उड़ता है तितली सा
फूलों की क्यारी में
मचलता है मछली सा
नदिया के दर्पण में
नाचता है जी भर के
मौसम सुहाने में
हर एक को बांधता है, सपनों के
धागे में
मेरे अंदर आज भी एक
छोटा सा बच्चा है।

वो भटकता है, बहकता है,
बचकानी हरकतें करता है

हर रोज़ सयाना होने को
निकलता है
मासूम सवालियों से
तूफान उठाता है
छोटी सी उंगली पे
दुनिया को नचाता है
दिलकश सी हंसी में
जमाने को डुबाता है
नन्हीं सी आँखों में तारे, सजाता है
चढ़कर आकाश में
सूरज पकड़ता है
चढ़कर चाँद पर घोड़ा चलाता है
टिक-टिक की टापों पर महल
बनाता है
मेरे अंदर आज भी एक
छोटा सा बच्चा है।

वह राजा-रानी के किस्सों में
खुदको देखता है
परी लोक में जा-जाकर
जी भर के खेलता है
परियों की जादूभरी
दुनिया देखता है
सपनों में अपने तिलिस्म डूँढ़ता है
उड़ता है हवा में पंख लगा कर
तैरता है सागर में, बेड़ा सजा कर
नाचता है, गाता है,
आनंद मनाता है
मेरे अंदर आज भी एक
छोटा सा बच्चा है।

वंदना यादव.
नई दिल्ली.